वार्तालाप–519 बम्बई पार्ट–2 ता.17.2.08
Disc.CD No.519, dated 17.2.08 at Bombay, Part-2

0.00–8.18
बाबा– हमारा, हमारा जो है पहला–पहला सब्जेक्ट कौनसा है?
जिज्ञासु–याद।
बाबा– ज्ञान पहला सब्जेक्ट है और याद भी हमारी प्रवृत्तिमार्ग की याद है, निवृत्तिमार्ग की याद नहीं है। देह से कर्म किया जाता है। कर्म काहे से करते हैं? कर्मेन्द्रियों से कर्म करते हैं तो हमारा कर्म और योग दोनों साथ–साथ होना चाहिए। अगर हम बैठ गये तो कर्म हो रहा है कोई? सिर्फ बैठ गये, जंगल में जाके हम बैठ जाएं और बाबा को याद करना शुरू कर दें; कोई कर्म न करें।
जिज्ञासु– खाने–पीने का क्या?
बाबा– हाँ, खाना–पीना, जब याद में बैठेंगे तो वो जो झूठे योगी होते हैं उनको भी खाने–पीने की दरकार नहीं रहती, उनके श्वास प्रश्वास की परिकिया धीमी हो जाती है। हमारा भी ऐसा ही हो जायेगा। याद में तो सब बातों की पूर्ति होती है ना। तो हम जंगल में बैठ जायें अकेले। नई सृष्टि का निर्माण हो जायेगा?
जिज्ञासु– नहीं–नहीं।

0.01-8.18
Baba: What is our first subject?
Student: Remembrance.
Baba: Knowledge is the first subject and our remembrance is also a remembrance of the path of household. It is not a remembrance of the path of household. Actions are performed through the body. How do we perform actions? We perform actions through the bodily organs. So, our actions and yog should be simultaneous. If we sit [at one place], are we performing actions? If we just sit, if we go to a jungle and sit and if we start remembering Baba, if we do not perform any action...
Student: What about eating and drinking?
Baba: Yes, as regards eating and drinking, when you sit in remembrance…; those false yogis too do not require anything to eat and drink. Their process of exhaling and inhaling becomes slow. It will happen in our case also. Everything is accomplished in remembrance, isn't it? So, if we sit alone in a jungle, will the new world be built?
Student: No, no.

बाबा– नहीं होगा। इसलिए बाप है तो बाप का परिवार भी है। हमें कर्म करना बहुत जरूरी है। ऐसे नहीं कि हम आत्मा हैं तो आत्मिक स्थिति में बैठ जाने से ही काम चल जायेगा। सृष्टि दो से बनती है। अकेले पुरूष से सृष्टि नहीं बनती, अकेले स्त्री से सृष्टि नहीं बनती। स्त्री है प्रकृति, पाँच तत्वों का संघात और उसको कन्ट्रोल करने वाला है आत्मा। दोनों का संयोग चाहिए। ऐसे नहीं कर्म को हम छोड़ दें, पाँच तत्व को महत्व नहीं देंगे तो हम परमधाम के वासी तो बन जायेंगे पाँच हजार साल के लिए; लेकिन सुख भोगने के अधिकारी नहीं बनेंगे। सुख भोगना है तो स्त्री जाति को साथ, साथ लेना है, बाल–बच्चों को साथ लेना है। ये रचना है। रचयिता, रचना का तिरस्कार नहीं कर सकती इसलिए कर्मयोगी बनना है। याद भी रहे और, और कर्म भी रहे। गीतापाठशाला में जरूरी नहीं है एक घंटा याद में रहना, याद में बैठना। क्या? बैठकर के याद करना।
जिज्ञासु– बैठकर के ही याद करते हैं।
बाबा– क्या जरूरी है?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: It will not. This is why if there is the Father, there is the Father's family as well. It is very important for us to perform actions. It is not so, "we are souls; so, it is enough if we just sit in a soul conscious stage." World is created with the help of two. Man alone does not create the world; a woman alone does not create the world. Woman is nature: a combination of the five elements; and its controller is the soul. A combination of both is required. It is not so, we leave out actions [and think], 'we will not give importance to the five element at all', then we will no doubt become residents of the Supreme Abode for five thousand years, but we will not be entitled to experience happiness. If you have to experience happiness, then you have to take the woman's community along with you, you have to take your children along with you. This is a creation. A creator cannot ignore the creation. This is why you have to become a *karmayogi*. Remembrance and actions should be simultaneous. It is not necessary to sit in remembrance for an hour in the *Gitapathshala*. What? To sit and remember.
Student: We sit and remember.
Baba: Where is the necessity?

जिज्ञासु– बैठ के ही याद कर रहें है क्योंकि वो स्पेस लिमिटेड रहता है न। जगह लिमिटेड है तो बैठ के ही याद करेंगे वहाँ सब।
बाबा– अच्छा, कोई छोटी गीतापाठशाला है। उसमें जगह लिमिडेट है, बैठने वाले ज्यादा हैं।
जिज्ञासु–हाँ।
बाबा– अच्छा! बस में क्या करते हैं?
जिज्ञासु– बस में बैठ के बाबा को याद करते जाते हैं।
बाबा– बस में बैठ के याद करते हैं? जगह नहीं मिलती तो क्या करते?
जिज्ञासु– खड़े–2 करेंगे।
Student: we sit and remember because there is limited space, isn't it? There is limited space so everybody will sit and remember.
Baba: OK, there are some small *gitapathshalas* which have limited space; there are many people who have to be seated.
Student : yes..
Baba: OK, what do you do in a bus?
Student: We sit in the bus and remember Baba.
Baba: Do you sit and remember in the bus. If you do not get a seat, what do you do?
Student: We will stand and remember.

बाबा– खड़े–2 याद कर सकते हैं ना। ऐसा तो नहीं कि खड़े–2 याद नहीं होती? होती है कि नहीं? होती है तो करेंगे। माना ये कोई जरूरी नहीं है कि एक घंटा याद में बैठना ही जरूरी है। जब हम संगठन क्लास करें एक घंटा याद में बैठना जरूरी है ये कोई पक्का नहीं है; लेकिन तब तक जरूरी है जब तक हमारी प्रैक्टिस, एकाग्र होने की नहीं हो रही है। तब तक हमको हठयोग भी करना पड़े तो हम हठयोग भी करें। जैसे हम बीमार हैं। हमें पता चला कि योग सबसे बड़ी दवाई है, परमात्मा की याद सबसे बड़ी दवाई और आखरी दवाई यही है। है कि नहीं?
जिज्ञासु– है।
बाबा– है। फिर हम दूसरे जो तरीके हैं मनुष्यकृत – एलोपेथी, होम्योपेथी, नेचरोपेथी – इनको उपयोग में लायें या नहीं लायें?
जिज्ञासु– प्रवृत्ति निभाना है।
बाबा– नहीं–2। प्रवृत्ति की बात नहीं। कहा, कि इनको उपयोग में लायें या न लायें?
जिज्ञासु– लाना तो पड़ेगा ही। लायें–2।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: You can remember while standing, can't you? It is not that you cannot remember while standing. Can you or can't you? You can. So you will (remember). It means that it is not necessary that you have to sit in remembrance for an hour. It is not necessary that you have to sit compulsorily in remembrance in the *sangathan* class, but it is necessary until we have practiced concentration. Until then we should also do *hathyog* if we have to. For example, when we are ill, we know that *yog* is the greatest medicine, remembrance of the Supreme Soul is the greatest medicine and it is the ultimate medicine. Is it or is it not?
Student: It is.
Baba: It is. Then should we use the other man-made methods like allopathy, homeopathy, naturopathy or not?
Student: We have to follow [the path of] household.
Baba: No, no. It is not about the household. It was asked whether we should use them or not?
Student: We will definitely have to use them.

बाबा– लाना पड़ेगा ही, क्यों? क्योंकि अभी पूड़ी पकी नहीं है, राजयोग परिपक्व स्टेज में पहुँचा नहीं है। पूड़ी घी में ड़ाली जाती है, नीचे पड़ी रहती है। ड़ालते ही ऊपर क्यों नहीं आ जाती? उसका एक गर्मी का जो टेम्परेचर है जब तक उसको नहीं मिलेगा तब तक वो ऊपर नहीं आयेगी। ऐसे ही पुरूषार्थ का भी टेम्परेचर है। वो जब तक टेम्पर नहीं पकड़ेगा। कितनी देर याद में टिकते हैं? बैठके भी कितनी देर टिकते हैं? अरे, ज्यादा में ज्यादा किसी का अनुभव हो तो बतायें कि हम इतनी देर याद में टिक जाते हैं, बिन्दूरूपी स्टेज में टिके रहते हैं, कितनी देर? अरे, ज्यादा से ज्यादा किसी का अनुभव हो तो, आप ही बताओ ना, आपका प्रश्न है?
Baba: We will have to use them; why? It is because the *poori* has not been fried completely; the *rajyog* has not reached the stage of maturity. When a *poori* is put into *ghee* it remains at the bottom. Why does it not come to the surface as soon as it is put (into hot oil)? Until it gets the (optimum) heat, the *temperature*, it will not come to the surface. Similarly, there is an (optimum) *temperature* of efforts. Until it catches the pace (*temper)*; how long do you remain constant in remembrance? How long do you remain constant in remembrance even while sitting? Arey, if someone has an experience (of sitting in remembrance), he should tell how long he remains constant in remembrance at the most, how long does he remain constant in seed-form stage? Arey, what is the maximum experience anyone has had? (Addressing the student -) You, tell us. It is your question, isn't it?

जिज्ञासु– वो स्टेज बनती नहीं है।
बाबा– वो स्टेज बनती ही नहीं। तो क्या मरना है क्या? कहते हैं हम तो ईश्वर की ही दवाई उपयोग करेंगे, हम मनुष्यों की दवाई लेंगे ही नहीं और बीमारी भयानक–भयानक लगी हुई है। उससे ये भी देखते हैं कि लोंगो को फायदा हो रहा है, कम से कम जिंदा तो रह जाते हैं। अरे, ''जान है तो जहान है'' इसलिए हमें कोई घृणा नहीं है बैठकर के याद करने से; लेकिन मजबूरी ये है कि जब तक हमारी याद टिकने वाली नहीं बन रही है, हमारी याद का पुरूषार्थ, याद का अभ्यास हमारा परिपक्व स्टेज में नहीं पहुँच रहा हैं तब तक के लिए धीरज धर मनुआ धीरज धर।
Student: I am unable to achieve that stage at all.
Baba: That stage is not achieved at all. So, do you want to die? You say that you will use only God's medicine; you will not take the medicine of human beings at all and you are suffering from dangerous diseases. And you also see that people are being benefited; at least they remain alive (by consuming those medicines). Arey, there is a saying '*jaan hai to jahaan hai'* (the world exists for someone only if he is alive); this is why, we have no dislike for sitting in remembrance. But the compulsion is that until we achieve a stage of constant

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

remembrance... until we reach the mature stage of making efforts for remembrance, for practice of remembrance, we have to be patient till then.

जिज्ञासु– फिर वो जब दवाई बंद हो जायेगी।
बाबा– कौनसी दवाई?
जिज्ञासु– जो दवाई अभी मिल रही हैं।
बाबा– वो तो मजबूरी का नाम महात्मा गांधी। मिलना ही बंद हो गया फिर तो नम्बरवार के लिस्ट में आ जायेंगे।
जिज्ञासु– बंद हो जायेगी तो अपने आप स्टेज बन जायेगी ना।
बाबा– अच्छा, तो इंतजार कर रहे हैं। हम अपने आप पुरूषार्थ नहीं करेंगे। क्या?
जिज्ञासु– समय करेगा।
बाबा– हाँ, समय हमसे पुरूषार्थ करायेगा। तो जड़ समय जब आपको पलटेगा, समय भी क्या है? जड़ है और वो आपको पलटने के निमित्त बन जायेगा तो आप भगवान को मानने वाले हैं या समय को मानने वाले हैं?
जिज्ञासु– समय को।
बाबा– और समय को मानने वाले बौद्धी लोग होते हैं। क्या? वो कहते हैं समय ही चेंज करता है, भगवान अलग से कोई चीज़ नहीं होती है। ये, ये अच्छी बात है क्या? समय तो जड़ है और आत्मा तो चैतन्य है। चैतन्य आत्मा पुरूषार्थी है। आत्मा का बाप भी है वो भी चैतन्य है। तो समय को आगे नहीं रखना है, क्या करना है? बाप को आगे रखना है और बाप को देखकर के पुरूषार्थ करना है, फॉलो करना है।
Student: What about when those medicines stop becoming available.
Baba: Which medicine?
Student: The medicines are available now.
Baba: The name of compulsion is Mahatma Gandhi. Once they stop becoming available, then you will come in the *numberwise* list.
Student: When they stop becoming available we will automatically achieve that stage, will we not?
Baba: So, you are waiting. We will not make spiritual efforts (*purusharth)* ourselves. What?
Student: The time will do it.
Baba: Yes, time will enable us to make efforts. So, when the non-living time transforms you; what is time also? It is non-living and if it becomes an instrument in transforming you, then do you believe in God or do you believe in time?
Student: Time.
Baba: And those who believe in time are Buddhists. What? They say that the time changes us. God is not a separate entity. Is it good? Time is non-living and the soul is living. The living soul is the the one who makes efforts. The Father of the soul is also living. So, you should not keep time ahead; what should you do? You should keep the Father ahead. And you have to make spiritual efforts (*purusharth)* keeping the Father in front of you; you have to follow Him.

11.12–16.27
जिज्ञासु– 36 तक ज्ञान चलेगा ना तो सम्पूर्ण कब होंगे ?
बाबा– 36 तक ज्ञान चलेगा किसके लिए? सबके लिए या कोई आत्माओं की कैटेगिरी है उनके लिए?
जिज्ञासु– ज्ञान तो लास्ट में जाके पूरा होगा।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा– हाँ, 36 तक ज्ञान तो चलेगा; लेकिन वो ज्ञान किसके लिए? जो देह अभिमान में जिंदा रहेंगे उनके लिए या जो देह अभिमान में मर चुके होंगे उनके लिए ज्ञान चलेगा? किनके लिए चलेगा?
जिज्ञासु– सम्पूर्ण कैसे बाबा, ज्ञान जब तक पूरा सुनेंगे नहीं ना तब तक सम्पूर्ण कैसे बनेंगे?
बाबा– कोई आत्मायें क्लास में ऐसी होती हैं कि पढ़ाई को पहले धारण कर लेती हैं और मॉनिटर बनकर के बैठ जाती हैं। मॉनिटर क्या करता है? टीचर छुट्टी ले लेता है तो मॉनिटर क्या करता है? पढ़ाई पढ़ाता है। कोई ऊँगली उठाये – ए तुम देवता बन चुके जो हमको पढ़ाई पढ़ाय रहे हो ?क्योंकि ये पढ़ाई काहे कि है? क्या बनने की पढ़ाई है? देवता बनने की पढ़ाई है और खुद उसको राक्षस दिखाई पड़े तो लोग ऊँगली उठायेंगे ना। खुद नारायण नहीं बना, खुद 16 कला सम्पूर्ण नहीं बना और दूसरों को पढ़ाई पढ़ा रहा है तो सभी लोग उसको मॉनिटर मानेंगे?
जिज्ञासु– नहीं।
Time: 11.12-16.27
Student: The knowledge will continue till (20)36, will it not? So, when will we become perfect?
Baba: For whom will the knowledge continue till (20)36? Is it for everyone or for a certain category of souls?
Student: The knowledge will be completed in the last.
Baba: Yes, it will definitely continue till (20)36, but for whom is that knowledge? Will the knowledge continue for those who remain alive in body consciousness or for those who would have killed their body consciousness? For whom will it continue?
Student: How will we become complete Baba? Unless we listen to the knowledge completely, how will we become complete?
Baba: There are some souls in a class who assimilate the teachings first and take the seat of a monitor. What does a monitor do? When a teacher takes leave, what does a monitor do? He teaches the teaching. If someone raises his finger (points a finger), Eh! have you become a deity that you are teaching us? Because… what is the knowledge for? This is a teaching to make you what? It is a knowledge to make someone a deity and if he (the monitor) himself appears to be a demon, then people will point a finger, will they not? If he has not become a Narayan himself, if he has not become complete with 16 celestial degrees and if he is teaching others, then will everyone accept him as a monitor?
Student: No.

बाबा– ये कोई हद की पढ़ाई तो है नहीं। कैसी पढ़ाई है? बेहद की पढ़ाई है। तो ऐसा नहीं है कि पाँच सौ करोड़ आत्मायें एक साथ आत्मा बन जावेंगी। हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है? नर से नारायण बनना। और नारायण जिसको बनना है या नारायण समान बनना है... क्या? तो जैसा नाम है वैसा प्रैक्टिकल काम भी जीवन में दिखाई पड़े। नार आयन। आत्मा कहाँ वास करने वाली बन जाये? भले शरीर रहे, जिंदगी रहे, जीवन दिखाई पड़े, आँखे भी दिखाई पड़ रही हैं कि आँख खुली हुई हैं। जिंदा आदमी है। क्या? ये दिखाई पड़ रहा है लेकिन फिर भी मन–बुद्धि रूपी आत्मा ज्ञान आयन में रहने वाली बन जाये। क्या? ज्ञान ही उसका घर बन जाये। जो भक्तिमार्ग में दिखाया जाता है तालाब के अंदर क्षीरसागर बनाया हुआ है और उसमें नारायण बैठा हुआ है। ऐसे नहीं है विकारी सर्पों का आधार जीवन में नहीं लिया हुआ है, विकारी सर्पों का आधार भी है और वो सर्प उसकी रक्षा भी कर रहे है, विकारियों से। फिर भी नाम उसका क्या रखा गया? नारायण। ज्ञान जल ही उसका घर है माना जीवन रहे फिर भी जीवन के रहते–2 बुद्धि में अज्ञान न चले। सोते–जागते हर समय ज्ञान में रमण करने वाली आत्मा बनी रहे, सूक्ष्मवतनवासी। पाँच सौ करोड़ की सृष्टि का

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

विनाश होगा तो टोटल विनाश होने से पहले कुछ आत्मायें ऐसी भी तो होंगी जो ढ़ेर के ढ़ेर सूक्ष्म शरीर धारण कर चुकी होंगी। होंगी या नहीं?
Baba: This is not a limited study. What kind of a study is it? It is an unlimited studies. So, it is not so that five billion souls will become souls (i.e. soul conscious) at the same time. What is the target of our life? To become Narayan from a man . And the one, who wants to become Narayan or wants to become equal to Narayan…. What? …so, as is his name, his practical actions should also be visible in his life accordingly. *Naar Aayan*. The soul should become a resident of which place? Even though the body is alive, even though life exists, even though life is visible, the eyes are also visible, that the eyes are open. The person is alive; what? This is visible, yet the soul in the form of the mind and intellect should become a resident of the abode (*aayan*) of knowledge. What? Knowledge itself should become his home. It is shown in the path of *bhakti* that *ksheersaagar* (ocean of milk or the abode of Vishnu) exists within a lake and Narayan is sitting there. It is not so that he has not taken the support of vicious snakes in his life; there is the support of vicious snakes as well and those snakes are protecting him from vicious persons too. Still, what was he named? Narayan. The water of knowledge itself is his home, i.e., there should be life and even while being alive, there should not be ignorance in the intellect. While sleeping and while awake, the soul should remain a soul that remains busy in knowledge, a subtle world dweller. The world consisting of five billion souls is destroyed, then before the total destruction, there will be some souls who would have assumed numerous subtle bodies. Will there be such souls or not?

जिज्ञासु– होंगी।
बाबा– वो कहाँ रहेंगी?
जिज्ञासु– सूक्ष्मवतन में।
बाबा– वो सूक्ष्मवतन में रहेंगी और टाईम टू टाईम देह धारण करनेवालों में आक्रमण करती रहेंगी। करेंगी या नहीं? करेंगी।
जिज्ञासु– आज भी तो कर रही हैं।
बाबा– अभी भी कर रही हैं। आगे चलकर और ज्यादा करेंगी। कितनी भयानक परिस्थिति हो जायेगी। वातावरण कैसा हो जायेगा? बहुत भयानक हो जायेगा। जब एक–एक में दर्जनों आत्मायें प्रवेश करेगी। कभी कोई अटैक करेगी, कभी कोई अटैक करेगी। उस समय अगर परमात्मा के ज्ञान का आधार नहीं लिया है ज्ञान जल में, ज्ञान सरोवर में रहनेवाली आत्मा अपने को नहीं बनाया है, अभ्यासी नहीं बनाया है तो कोई न कोई सोल प्रवेश करती रहेगी। सवाल का जवाब मिल गया? हो गया।
Student: There will be.
Baba: Where will they live?
Student: In the subtle world.
Baba: They will live in the subtle world and they will keep attacking (i.e. entering) from time to time the souls which have bodies. Will they or will they not? They will.
Student: They are (attacking) even now.
Baba: They are (attacking) even now. They will (attack) even more in future. The situation will be so dangerous. How will be the atmosphere? It will be very dangerous when dozens of souls will enter each one. Sometimes someone will attack and sometimes someone else will attack. At that time, if you have not taken the support of the knowledge of the Supreme Soul, if you have have not made yourself a soul that lives in the water of knowledge, in the lake of knowledge, if you have not practiced doing that, then some or the other soul will keep entering. Did you get the answer to your question? You got it.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

16.30–21.35
जिज्ञासु– आत्मिक स्थिति श्रेष्ठ है कि बाबा की याद श्रेष्ठ है?
बाबा– आत्मा ज्योतिबिंदु है और परमात्मा बाप भी ज्योतिबिंदु है। आत्मा अपने शरीर के पाँच तत्वों को कन्ट्रोल कर पा रही है या नहीं कर पा रही है? नहीं कर पा रही है। तो आपने आत्मिक स्थिति तो धारण की लेकिन वो आत्मा तमोप्रधान है, रजोप्रधान है, सतोसामान्य है, सतोप्रधान है, कैसी स्टेज वाली है? मालूम है? जैसे को याद करेंगे वैसे ही बनेंगे ना; तो क्या फैसला किया? जल्दी–जल्दी बोलो ना, फैसला करो जल्दी।
जिज्ञासु– बाबा की याद।
बाबा– हाँ, सिर्फ आत्मिक स्थिति से काम नहीं चलेगा क्योंकि आत्मायें नीचे–ऊपर होती रहती हैं।

Time: 16.30-21.35
Student: Is the soul conscious stage greater or Baba's remembrance greater?
Baba: Soul is a point of light and the Supreme Soul Father is also a point of light. Is a soul able to control the five elements of its body or not? It is not. So, you did take on the soul conscious stage, but what is that soul like: *tamopradhan, rajopradhan, satosamanya, satopradhan*? In which stage is it? Do you know? You will become like the one whom you remember, will you not? So, what did you decide? Speak quickly; decide quickly.
Student: Baba's remembrance.
Baba: Yes, it will not suffice if there is just soul conscious stage because the souls keep oscillating up and down.

जिज्ञासु– बाबा ने बोला है आत्मिक स्थिति में बाप की याद स्वतः हो जाती है।
बाबा– तो ऐसी परिपक्व स्टेज धारण करें ना। कितनी देर बनती है आत्मिक स्थिति? अरे, बिंदु की याद, अपनी आत्मा ही बिंदु रूप में टिकी रहे और कुछ याद न आये। ऐसी स्टेज कितनी देर बनती है? पक्की हो गई?
जिज्ञासु– नहीं।
बाबा– वो ही पक्की नहीं हुई है। फाउन्ड्रेशन ही पक्का नहीं हुआ है।
जिज्ञासु– बाबा की याद तो ...
बाबा– बाबा की याद नहीं होती।
जिज्ञासु– बाप की याद होती है, बोला है.....
बाबा– बाप की याद होती है, बाबा की याद नहीं होती। माना बाप एक ही है। बेहद का बाप एक ही है, दो नहीं हैं। अरे, बेहद का बाप एक है या दो हैं?
जिज्ञासु– दो हैं।
बाबा– दोंनो कम्बाइन्ड हैं या अलग–अलग हैं?
जिज्ञासु– कम्बाइन्ड है।
बाबा– तो एक को याद करना या दो को याद करना?
जिज्ञासु
Student: Baba has said that the Father's remembrance is automatic in a soul conscious stage.
Baba: For that you need to achieve such a perfect stage, don't you? How long are you able to be in soul conscious stage? Arey, the remembrance of the point, your soul should become constant in the point-form and you should not remember anything else. How long do you remain in such a stage? Has it become firm?
Student: No.
Baba: That itself has not become firm. The foundation itself has not become firm.
Student: It is not Baba's remembrance, is it?....
Baba: It is not Baba's remembrance.
Student: It is Father's remembrance; it has been said…..

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: (Do you mean to say) There is Father's remembrance; there is no remembrance of Baba. Does it mean there is only one Father? There is only one Father in an unlimited sense and not two. Arey, is there only one father in an unlimited sense or are there two fathers?
Student: There are two.
Baba: Are both of them combined or separate?
Student: They are combined.
Baba: So, do you have to remember one or two?
Student said something…..

बाबा– नहीं। बेहद का बाप तो एक ही है रूहानी बाप, दूसरा तो जिस्मानी है और जो एक्ट करनेवाला है सत् एक्ट, सच्चा कर्म करनेवाला है वो रूहानी बाप है या जिस्मानी बाप है? सतयुग स्थापन करनेवाला कौन है? रूहानी बाप; लेकिन वो रूहानी बाप की मुसीबत ये है कि बिना शरीर के कुछ कर नहीं सकता, एक्ट नहीं कर सकता, कोई वाणी भी नहीं उच्चार सकता, दृष्टि भी नहीं दे सकता। तो याद जो है उस रूहानी बाप को याद करना है और साकार में ही याद करना है। नहीं याद करेंगे तो सदगति नहीं होगी। सदगति माना सच्ची गति। सच्ची गति वो है जो शरीर के सहित हो। शरीर में रहते–रहते सुख भोगे, दुःख न भोगे। ऐसी स्टेज जीवन में रहते–रहते विनाश होने से पहले यहीं इस दुनिया में बनानी है या हाय–हाय करते मरना है? हाय–हाय करते नहीं मरना चाहते? अगर ऐसी स्टेज बनानी है तो बाप को याद जरूर करना पड़े। नहीं तो आत्मा का ही संग करेंगे, आत्मा की ही स्मृति रहेगी तो सम्पन्न स्टेज नहीं बन सकती। इब्राहिम की स्टेज तक पहुँचेंगे उससे ऊपर का सुख नहीं प्राप्त कर सकेंगे। पुरानी दुनिया में सबसे ऊँचे ते ऊँचा सुख भोगने वाली आत्मा कौन है? इब्राहिम; लेकिन व्यभिचारी सुख भोगती है और हमको? हमको तो सदगति चाहिए। ऐसे नहीं कि कलियुग में सदगति नहीं होती। कलियुग में भी जो ऊपर से आत्मायें उतरने वाली हैं आधा टाईम, आधे जन्म उनके सदगति के होते हैं। सुख ही भोगती हैं। कम से कम पहला जन्म जरूर सुख में भोगेंगी। तो वो सुख अगर शरीर से चाहिए तो जो देह में आया हुआ, मुकर्रर तन में आया हुआ बाप है उसको याद जरूर करना पड़े और दोनों को याद करना पड़ेगा, क्या? साकार में निराकार को याद करना पड़ेगा।
Baba: No. There is only one spiritual Father in an unlimited sense. The other one is the physical [father]. And is the one, who acts, who acts truly, who performs true acts, the Spiritual Father or the physical father? Who establishes the Golden Age? The Spiritual Father; but the problem with that Spiritual Father is that He can do nothing without body; He cannot act, He cannot speak anything; He cannot even give *drishti* (i.e. see anyone). So, you have to remember that Spiritual Father and you have to remember him in corporeal form only. If you do not remember (through the corporeal) you will not achieve *sadgati. Sadgati* (true salvation) means true *gati*. True *gati* is that which is achieved through the body. You should experience happiness while living in the body; you should not experience sorrow. You have to achieve that stage while being alive here in this very world before the destruction, or do you have to die crying in despair? You do not want to die crying in despair, do you? If you wish to achieve such a stage, then you will certainly have to remember the Father. Otherwise, if you keep only the company of soul, if you remember only the soul, then you cannot achieve the stage of perfection. You can reach the stage of Abraham. You will not be able to achieve a stage higher than that. Which soul enjoys the highest joy in the old world? Abraham; but he experiences adulterous pleasure and what about us? We want *sadgati*. It is not so that there is no *sadgati* in the Iron Age (*kaliyug*). Even in the Iron Age the souls that descend from above experience *sadgati* for half the time , for half the number of their births. They experience only happiness [then]. At least they will enjoy happiness in the first birth. So, if you want the happiness through the body, then you will certainly have to remember the Father who has

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

come in the body, in the permanent body. And you will have to remember both; what? You will have to remember the incorporeal one within the corporeal one.

21.38–28.43
जिज्ञासु– बाबा मुरली में आया है शेरनी का दूध सोने के बर्तन में रहता है, तो ये बात। शेरनी का दूध सोने के बर्तन में रहता है।
बाबा– ठीक है।
जिज्ञासु– मतलब?
बाबा– मतलब नहीं क्लीयर हुआ। अगर मतलब क्लीयर नहीं हुआ तो ये भी क्लीयर नहीं हुआ होगा की आपका निशाना कौनसी शेरनी के ऊपर है?
जिज्ञासु–...
बाबा– तो कौनसी शेरनी का दूध पियेंगे? अरे, कोई का भी मिल जाये भैंस–हैंस का मिल जायेगा, चलेगा? ब्रह्मा सो विष्णु कहा जाता है, क्या? ब्रह्मा सो विष्णु। विष्णु स्वरूप का पार्ट बजाने वाली जो भी आत्मायें हैं वो सब ब्रह्मा का पार्ट बजानेवाली हैं या नहीं हैं? हैं। और ब्रह्मा जो है वो पहले शेर के रूप में माना जा रहा है। वो भी तो शेर के रूप में मानते हैं ना लोग? बाबा ने हमको बता दिया कि सिर्फ ब्रह्मा जो है वो भी शेर नहीं है, क्या है?
जिज्ञासु– घोड़ा है।
Time- 21.38-28.43
Student: Baba, it has been mentioned in the Murlis that the milk of a lioness can be stored only in a golden utensil. The milk of a lioness can be stored only in a golden utensil.
Baba: It is correct.
Student: What does it mean?
Baba: Did you not understand the meaning? If its meaning is not clear then even this would not have become clear as to which lioness you are talking about?
Student said something.
Baba: So, you will drink the milk of which lioness? Arey, will it do if it is the milk of any buffalo and so on? It is said that Brahma becomes Vishnu. What? Brahma becomes Vishnu. All the souls which play the part of Vishnu play the part of Brahma or not? They do. And Brahma is considered to be the first lion. People believe him to be a lion, don't they? Baba has told us that just Brahma is not a lion; what is he?
Student: He is a horse.

बाबा– चलो घोड़ा कह दो। असली शेर नहीं, शेरनी कह दो तो भी चलेगा, क्या? और दूध किसका पीना है? अम्मा का पीना है कि बाप का? बताया – कन्याओं–माताओं के मुख से जो ज्ञान सुना जाता है वो ज्यादा धारणावान ज्ञान है और पुरूषों के द्वारा जो ज्ञान सुना जाता है वो विष्णु नहीं बनाए सकता, विष्णु ` समान देवता नहीं बनाए सकता। भल शंकर महाराज खुद ही ज्ञान क्यों ना सुनाएं। तो भी रूद्रमाला के मणके तो बनेंगे; लेकिन विष्णु, विष्णु नहीं बनेगा। इसलिए जो ज्ञान है वो कन्याओं–माताओं में जो सर्वोपरि कन्या–माता के रूप में पार्ट बजानेवाली है वो शेरनी का पार्ट बजानेवाली है। क्या? शेरनी भी दो प्रकार की होती है। कौन–कौनसी? एक फीमेल टाईगर और एक फीमेल शेर[1]। ज्यादा ज्ञानी कौनसा कहा जायेगा?
जिज्ञासु–
बाबा– नहीं।
जिज्ञासु– मेल टाईगर।

[1] edited

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: 29.42 OK, call him a horse. If he is not a true lion, it will do if you call him a lioness; what? And whose milk should you drink? Should you drink the milk of the mother or of the father? It has been said: the knowledge which is received through the mouth of virgins and mothers is more inculcative knowledge and the knowledge that is narrated through the men cannot make us Vishnu. It cannot make us a deity like Vishnu. Even if Shankar Maharaj himself narrates knowledge they can become beads of the Rudramala, but they cannot become Vishnu. This is why as regards the knowledge, the one who plays the part of the highest virgin or mother among all virgins and mothers, plays the part of a lioness. What? Lionesses are of two kinds. Which kinds? One is a female tiger and one is a female lion. Who will be called more knowledgeable?
Student said something.
Baba: No.
Student: Male tiger.

बाबा– जो फीमेल टाईगर है वो बहुत ज्ञानी है। वो फीमेल टाईगर जो बहुत ज्ञानी है वो सुनने–सुनाने तक सीमित रहता है या लास्ट स्टेज में जब पहुँचता है तो समझने–समझाने और धारण करने–कराने वाला भी बन जाता है? सुनने–सुनाने, समझने–समझाने और धारण करने–कराने की स्टेज में पहुँच जाता है; लेकिन दुनियावाले उसको पहले आगे रखते हैं जो पहले से ही धारणावान की स्टेज में हो। एक गुरू वशिष्ठ है, एक विश्वामित्र है। दोंनो ही अच्छे पुरूषार्थी माने जाते हैं; लेकिन पहले जीत किसकी होती है? वशिष्ठ की जीत हो जाती है इसलिए वो पहले से ही श्रेष्ठ है और विश्वामित्र तो पुरूषार्थ करने के बाद श्रेष्ठ बने; तो असली शेरनी कौनसी है जिसका दूध धारण करना है, जिसका दूध धारण करने से हम श्रेष्ठ बनेंगे? एक है भारतमाता, एक है जगतमाता। भारतमाता जितनी धारणावान है और रहेगी अंत तक, अविनाशी रूप में, उतनी जगतमाता धारणावान नहीं रह सकती क्योंकि उसको असुरों का भी संग का रंग लगता है। आसुरी बच्चे ज्यादा हैं और देवताई बच्चे कम हैं। है तो जगदम्बा। इसलिए जो शेरनी का दूध है वो बुद्धि में सदैव धारण करना है, आवाहन करना है या नहीं करना है? करना शुरू किया कि नहीं?
जिज्ञासु– बाप, टीचर, सदगुरू बाप ही है ना।
बाबा– बाप है।
जिज्ञासु– उससे ही सीखना पड़ेगा ना।
Baba: The female tiger is very knowledgeable. Does the female tiger who is very knowledgeable remain limited to listening and narrating [knowledge] or does it also achieve the stage of understanding and explaining and inculcating and making others inculcate when it reaches the last stage? It reaches the stage of listening, narrating, understanding, explaining, inculcating and making others inculcate. But the people of the world keep that person ahead who has been inculcating the knowledge from the beginning. One is Guru Vashishth, one is Vishwamitra. Both are considered to be good purusharthis (those who make efforts). But who wins first? Vashishth wins. This is because he is righteous from the beginning and Vishwamitra became righteous after making efforts. So, who is the true lioness whose milk we have to inculcate and by inculcating whose milk we will become righteous? One is mother India (*Bharatmata*) and another is world mother (*Jagatmata*). The extent to which *Bharatmata* inculcates (the knowledge) and inculcates it till the end in an imperishable way, Jagatmata cannot inculcate it to that extent because she is coloured by the company of the demons. Demoniac children are more and deity children are less. She is Jagdamba, this is why should you inculcate the milk of the lioness in the intellect forever; should you call her or not? Have you started doing that or not?
Student: The Father is the Father, Teacher and Satguru, isn't He?
Baba: He is the Father.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: We will have to learn from him, will we not?

बाबा– नहीं। बाप ड़ायरेक्शन तो दे रहा है कि कन्याओं–माताओं के मुख से सुनना अच्छा है या पुरूष मुख से सुनना है? सम्पन्न रूप में सदगति कब कही जायेगी? सम्पन्न कब बनेंगे? अच्छा, रूद्रमाला के मणके हैं, शिवबाप के बच्चे हैं, राजा बननेवाले बच्चे हैं; लेकिन उनकी भी सदगति कब होगी?
जिज्ञासु– विजयमाला का आवाहन करने से।
बाबा– हाँ, जब विजयमाला का आवाहन करें, प्रवत्तिमार्ग को पक्का करें और फिर सुनें। जो असली शेरनी है, शेरनी का दूध... वो भी एक बंधन है। अगर देह अभिमान को भोगते रहेंगे, तो शेरनी का दूध देह अभिमान वाली बुद्धि को, बर्तन को तोड़ के निकल जायेगा, ठहरेगा ही नहीं। कब ठहरेगा? जब देह अभिमान को त्याग कर के माना पाँच विकारों का त्याग करने का पक्का निश्चय लेकरके उस ज्ञान को धारण करेंगे तो टिका रहेगा। प्रश्न का समाधान हुआ? हो गया। शेरनी की पहचान हो गई।
Baba: The Father is giving the direction, [so] is it better to listen from the mouth of virgins and mothers or from the mouth of men? When will *sadgati* be said to be achieved in a final form? When will you become perfect? OK, the beads of the *Rudramala* are children of the Father Shiv, they are children who become kings, but when will they achieve *sadgati*?
Student: *Vijaymala…..*
Baba: Yes, you should summon the *vijaymala*; you should become firm in the path of household and then listen. The milk of the true lioness, is also bondage. If you continue to enjoy the pleasure of body consciousness, the milk of the lioness will break the body conscious intellect, [i.e.] the utensil and come out. It will not remain in it. When will it remain in it? When you become firmly determined to renounce body consciousness, to renounce the five vices and inculcate the knowledge then it will remain in it. Did you get the solution to your question? You got it. You recognized the lioness.

31.50–34.50
जिज्ञासु– त्रेता के अंत में दस करोड़ जनसंख्या होगी।
बाबा– ठीक है।
जिज्ञासु– तो उसमें, त्रेता के अंत में जो अर्धविनाश होता है तो द्वापर के आदि में कितनी जनसंख्या बचती है?
बाबा– द्वापर के आदि में कितने बचते हैं? जब अर्धविनाश होगा तो मरेंगे कि नहीं कुछ? शरीर छोड़ेंगे कि नहीं और शरीर छोड़ेंगे तो सूक्ष्मवतनवासी भी बन सकते हैं। अरे, सूक्ष्म शरीर धारण करेंगे या नहीं करेंगे? करेंगे। और सूक्ष्म शरीरधारी हो सकते हैं तो ऐसे भी हो सकते हैं जिनमें विधर्मी आत्मायें प्रवेश कर जायें। दोंनो प्रकार के होंगे। माना जो असली देवी–देवता धर्म के पक्के होंगे वो बहुत थोड़े होंगे या ज्यादा होंगे? थोड़े होंगे। जो पुरानी सृष्टि है, दुखदाई सृष्टि है उसका फाउन्ड़ेशन ही ऐसा है। आपका प्रश्न पूरा क्लीयर नहीं है।
Time: 31.50-34.50
Student: The population would be ten crores at the end of the Silver Age.
Baba: It is correct.
Student: So, when the semi-destruction takes place at the end of the Silver Age, what will be the population that survives in the beginning of the Copper Age?
Baba: How many survive in the beginning of the Copper Age? When semi-destruction takes place, will some die or not? Will they leave their bodies or not? And when they leave their bodies, they can also become subtle world dwellers. Arey, Will they assume the subtle bodies or not? They will. And if there can be subtle bodied souls, there can also be such ones in whom the *vidharmi* souls enter. Both kinds of souls will exist. Meaning will those who are

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

firm in deity religion be very few or numerous? They will be very few. The foundation of the old world, the sorrowful world itself is like this. Your question is not completely clear.

जिज्ञासु– मैं ये जानना चाहता हूँ अर्धविनाश के बाद क्वांटिटी कितनी बचेंगे?
बाबा– हाँ, जो विनाशी दुनिया की क्वांटिटी होनी चाहिए वो भी थोड़ी होनी चाहिए या ज्यादा होनी चाहिए?
जिज्ञासु– थोड़ी होनी चाहिए।
बाबा– हाँ, विनाशी दुनिया में भी अच्छे लोग होते हैं; लेकिन विरले। तो थोड़ी आबादी होगी।
जिज्ञासु– बाबा वो सूक्ष्म शरीरधारी है उसमे दूसरी आत्मा कैसे प्रवेश करेगी?
बाबा– सूक्ष्म शरीरधारी में कहाँ आत्मा प्रवेश करती है? सब थोड़े ही सूक्ष्म शरीरधारी होते जाते है। कुछ ऐसे भी हैं तो इब्राहीम उसमें प्रवेश करेगा।
जिज्ञासु– विधर्मी प्रवेश करेगी बोला।
Student: I want to know what will be the *quantity* (i.e. number of people) who would survive the semi-destruction?
Baba: Yes, should the *quantity* of the perishable world be little or more?
Student: Little.
Baba: Yes, there are good people in the perishable world also, but very rare. So, the population would be less.
Student: Baba how will other souls enter in the subtlebodied souls?
Baba: Do souls enter in subtle bodied souls? Everyone does not become subtle-bodied. There are few such ones also [like the one] in whom Abraham will enter.
Student: It has been said that *vidharmis* will enter.

बाबा– एक तो होता है सूक्ष्म शरीर ऐसा कि वर्षों तक सूक्ष्म शरीर में रहता है ताकि उसके ऊपर पापों का बोझा इतना है कि वो और न चढ़े और कोई सूक्ष्म शरीरधारी ऐसे होते है जो एक–दो दिन सूक्ष्म शरीर धारण किया और फट से जन्म ले लिया। ये बात नहीं बुद्धि में? है ना। अरे, उनकी बात अधूरी रह गई। आप कुछ और पूछना चाहते थे।
जिज्ञासु– ये पूछना था कि द्वापर के आदि में वहाँ जो अर्धविनाश होंगे। 10 करोड़ की जनसंख्या है ना त्रेता के अंत में।
बाबा– त्रेता के (का) अंत जब होता है तब 10 करोड़ की संख्या होती है फिर विनाश होता है।
जिज्ञासु– फिर विनाश होता है तो उसमें कितने बचते हैं?
बाबा– बहुत थोड़े। जो पुरानी दुनिया है, पुरानी दुनिया भी सात्विक स्टेज में होनी चाहिए या शुरूआत से ही तमोप्रधान बन जायेगी? तो उसमें पुरानी दुनिया के भी जो भाँति हैं बहुत थोड़े होने चाहिए कि बहुत ज्यादा होने चाहिए? थोड़े होने चाहिए। ऐसे नहीं दस करोड होंगे।
Baba: One kind of subtle body is such that it exists for many years because it carries such a big burden of sins that it should not increase further (by assuming a physical body) and some subtle bodied souls are such that they assume subtle body for one or two days and take birth immediately. Is your intellect not aware of this aspect? It is aware, isn't it? Arey, his issue has remained incomplete. You wanted to ask something else.
Student: I wanted to ask when semi-destruction takes place in the beginning of the Copper Age, the population at the end of the Silver Age is 10 crores (hundred million).
Baba: The population is 10 crores at the end of the Silver Age. Then destruction takes place.
Student: When destruction takes place how many survive?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Very few. Should the old world also be in a pure stage [in the beginning] or should it become degraded from the beginning itself? So, should the members of the old world be very few or numerous? They should be very few. It is not that there will be hundred million.

34.59–37.15
जिज्ञासु– बाबा, जैसे पुरानी आत्मायें हैं। उनका ये कहना है कि हमने, बाबा ने पहले बताया जगदम्बा तुम्हारी माँ है तो हमने उनके साथ खाया पिया, तो हमको वो ही याद आ रहा है।
बाबा– लगाव लग जाता है ना। बाबा ने तो कहा देहधारियों से लगाव नहीं रखना है। बाबा ने तो पढ़ा दिया– एक शिवबाबा दूसरा न कोई; लेकिन कोई–2 बच्चे ऐसे हैं। क्या? बहुत अच्छा, अच्छा खिलाती–पिलाती है ना, देखने में अच्छी लगती है, प्यार हो जाता है। हाँ, तो?
जिज्ञासु– अभी बाबा कहते हैं कि लक्ष्मी वाली आत्मा बी.के. से आयेगी। फिर कहते हो नया संगठन बना हुआ है। तो ये बातें हमारे बुद्धि में बैठती नहीं।
Time: 34.59-37.15
Student: Baba, for example there are old souls (old in knowledge) who say that Baba told us earlier, 'Jagdamba is your mother'. So, we ate and drank with her. So, those very thoughts are coming to our mind.
Baba: Attachment develops, doesn't it? Baba has said, 'You should not have attachment for bodily beings'. Baba has taught, One Shivbaba and none else. But there are some children; what? She gives very nice things to eat and drink, doesn't she? She is good to look at; so they develop love. Yes, so?
Student: Now Baba says that the soul of Lakshmi will come from BKs. Then you say that a new sangathan (NS) exists. So, these issues do not sit in our intellect.

बाबा– क्यों? जो नया संगठन बनेगा, उस संगठन की बीजरूप आत्मा में कोई श्रेष्ठ नहीं होगी? नई सृष्टि का जो फाउन्ड़ेशन ड़ाला जाए उसमें अगर कोई श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ होगा नहीं बीज और प्रवृत्तिमार्ग वाला नहीं होगा, प्रवृत्तिमार्ग के उसमें संस्कार ही नहीं होंगे, निवृत्तिमार्ग के संस्कार होंगे। जब चाहा नहीं पसंद आया ड़ायवोर्स दिया और ये अलग हुए। तो नई दुनिया का फाउन्ड़ेशन ड़ालने वाला बीज कहा जायेगा? बोलो।
जिज्ञासु– नहीं कहा जायेगा।
बाबा– नहीं कहा जायेगा। उस लिस्ट में जगदम्बा नहीं आती है। जगदम्बा उस लिस्ट में आ जाती है जिसके लिए बाबा ने ड़ायरेक्शन दिया हुआ है स्पेशल, क्या? ''चाहे प्यार करे चाहे ठुकराये लेकिन हम तो हैं तेरे दीवाने सनम'' ये भी परीक्षा होती है। बाप कोई को ठुकराता नहीं है, न कोई साबित कर सकता है कि बाप ने ठुकराया; लेकिन माया परीक्षा लेती है मायावी पुरूषों के द्वारा। चाहे स्त्री रूप में हो, चाहे पुरूष रूप में हो। अरे, विरोधाभास क्लीयर हो रहा है कि नहीं हो रहा है? खोल के पूछ लो।
जिज्ञासु– बाबा, मेरा नहीं था। ये किसी का प्रश्न था।
बाबा– अच्छा आपका प्रश्न नहीं था। ब्रह्माजी बन गये आप।
Baba: Why? Will there not be someone righteous among the seed-form souls in the new gathering that will be established? If there is no most righteous seed belonging to the path of household in the foundation of the new world that is being laid, if it does not have the sanskars of the path of household, if it has the sanskars of the path of renunciation; if it gives divorce whenever it wishes and separates, then will it be called a seed that lays the foundation of the new world? Speak.
Student: It will not be called (such a soul).
Baba: It will not be called (such a soul). Jagdamba is not included in that list. Jagdamba comes in the list about which Baba has given a special direction; what? 'Whether you love me or reject me, I am your lover, O beloved' (*chahey pyaar karey chaahe thukraye, lekin*

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

ham toh hain terey deevaaney sanam), this is also a test. The Father does not reject anyone. Nor can anyone prove that the Father has rejected, but maya tests through illusive men, whether they are in female form or male form. Arey, is the contradiction becoming clear or not? Ask (clearly) without hesitation.
Student: Baba, this was not my question; it was someone else's question.
Baba: OK, it was not your question. You became Brahmaji (i.e. a mediator).

37.22–39.35
जिज्ञासु– बाबा सतयुग और त्रेता में कर्म अकर्म होते हैं।
बाबा– सतयुग में ही कर्म अकर्म नहीं होंगे। एक सतयुग ही ऐसा नहीं है जिसमें कर्म अकर्म हो जाते है। और एक युग है। नहीं याद आ रहा है? याद आ रहा है कि नहीं?
जिज्ञासु– प्रश्न पूरा नहीं किया।
बाबा– अच्छा, तो पहले जो प्रश्न है, अधूरा है इसलिए तो बता रहे है। आपकी बुद्धि में ये जो बैठा हुआ है कि सतयुग में ही ऐसा होगा कि कर्म अकर्म होंगे। ऐसा नहीं है। संगमयुग में ही कोई–2 आत्मायें ऐसी निराली होंगी, पुरूषार्थी जिनके कर्म, अकर्म हो जायेंगे। जिनके लिए गीता में लिखा है सारी सृष्टि की हत्या कर दे, सिर्फ मनुष्यों की नहीं, वो तो समझदार है फिर भी। कीट, पशु, पक्षी, पतंगे जो भी है प्राणी मात्र। सबकी हत्या कर दें तो भी उसके ऊपर पाप नहीं लगेगा। तो?
Time: 37.22-39.35
Student: Baba, *karma* (action) is *akarma* in the Golden Age and the Silver Age.
Baba: *Karma* will be *akarma* not just in the Golden Age. The Golden Age is not the only age where *karma* becomes *akarma*. There is one more age. Is it not coming to your mind? Are you able to recollect or not?
Student: I have not asked my question completely.
Baba: OK, I am saying this just because the question is incomplete. It is in your intellect that *karma* will become *akarma* only in the Golden Age. It is not so. In the Confluence Age itself there are some unique souls, those who make efforts (*purusharthi*) whose *karma* becomes *akarma;* for whom it has been written in the Gita: 'even if they kill the entire world…', not just the human beings, they(human beings) are intelligent. Even if they kill all the living beings including the worms, animals, birds, moths, they will not accumulate sins. So?

जिज्ञासु– त्रेता में ऐसा क्या हो जाता है जो विनाश करना होता है?
बाबा– त्रेता के अंत में। एक होता है पाप का पलड़ा, एक होता है पुण्य का पलड़ा। दो पलड़े हैं ना। उस तराजू में जिसमें दो पलड़े हैं – बुद्धि रूपी आत्मा माना मन–बुद्धि रूपी आत्मा में तो जो बुद्धि का तराजू है उसमें पुण्य का पलड़ा हल्का हो जाता है और वो पुण्य कमाये हैं संगमयुग में। कहाँ कमाये? संगमयुग में। वो पलड़ा हल्का हो गया ढ़ाई हजार वर्ष में और पाप करना शुरू कर दिया, पलड़ा नीचे हो गया। वो बैलेन्स बिगड़ेगा या नहीं बिगड़ेगा?
जिज्ञासु– बिगड़ेगा।
बाबा– जैसे सोना तोलते हैं तो सोना तोलने वाले जानते हैं कि थोड़ा भी वजन एक पलड़े में ज्यादा हो जाता है तो ऊपर–नीचे होता है। तो बैलेन्स बिगड़ जाता है पृथ्वी का। इसलिए भूकम्प आते हैं।
Student: What happens in the Silver Age that destruction has to take place?
Baba: At the end of the Silver Age. One is a side of sins and another is a side of noble acts. There are two sides (of a balance). In the balance with two sides, in the soul in the form of intellect, i.e. in soul in the form of the mind and intellect; in that balance of intellect, the side of noble acts becomes light and those noble acts have been accumulated in the Confluence

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Age. Where did you earn them? In the Confluence Age. That side became light in two thousand five hundred years. And you started committing sins. The side came down (i.e. became heavy). Will the balance be upset or not?
Student: It will.
Baba: For example, when you weigh gold…, those who weigh gold know that even if the weight increases on one side, then the balance gets upset. So, the balance of the Earth becomes upset. This is why Earthquakes occur.

39.40–41.23
जिज्ञासु– बाबा, ब्रह्मा भले चला जाये; लेकिन मम्मा अंत तक रहेगी। तो ओमराधे तो बीच में चली गई ना।
बाबा– कौन चली गई?
जिज्ञासु– मम्मा।
बाबा – मम्मा। हो–2, आप इतने देहभानी क्यों बने हैं जो आप मम्मा की आत्मा के लिए कहे चली गई। चली गई? अरे, मम्मा, मम्मा जिसका नाम आपने मम्मा रखा, जिसका नाम आपने मम्मा रखा, जगदम्बा रखा या जगदम्बा सरस्वती रखा वो आत्मा वास्तव में चली गई?
जिज्ञासु– है ना।
बाबा – है ना इस सृष्टि पर। जब है ना मौजूद तो अभी भी है और आगे भी पार्ट बजानेवाली है और वही आत्मा पार्ट बजानेवाली, क्या? और बाबा ने भी क्लीयर कर दिया– देवी एक ही है, क्या? देनेवालों कि लिस्ट में सिर्फ एक ही देवी है। बाकी सौ परसेन्ट देनेवाली की लिस्ट में नहीं है। जो वैष्णवी है उस आत्मा को भी सौ परसेन्ट देनेवाली नहीं कहेंगे। अगर होती तो जैसे जगदम्बा ओमराधे सरस्वती बुद्धि की देवी है। फट से बात को कैच करती थी। ऐसे ही जो वैष्णवी की टाईटल धारी है असली उसको बात कैच करना चाहिए कि नहीं? ज्ञान कैच करना चाहिए ना। कर रही है? नहीं कर रही है।
Time: 39.40-41.23
Student: Baba, (it has been said in the Murlis that) even if Brahma departs, Mamma will stay till the end. But Om Radhey left in between, didn't she?
Baba: Who left?
Student: Mamma.
Baba: Mamma. Oho! Why are you so body conscious that you think about the soul of Mamma that she left? Did she leave? Arey, has the one whom you named as Mamma, the one whom you named as Mamma, Jagdamba or Jagdamba Saraswati, has that soul actually left?
Student: She is present.
Baba: She is present in this world, isn't she? When she is still present and will also play her part in future and the same soul is going to play the part; what? And Baba has made it clear that there is only one Devi; what? There is only one Devi in the list of givers; all others are not in the list of 100 percent givers. The soul of Vaishnavi will not be called hundred percent giver either. Had she been so, then just as Jagdamba Om Radhey Saraswati is a Devi of intellect, she used to catch any point immediately; similarly should the true titleholder of Vaishnavi catch the point or not? She should *catch* (grasp) the knowledge, shouldn't she? Is she catching it? She isn't.

41.30–42.25
जिज्ञासु– बाबा, गुल्जार दादी के द्वारा जो ब्रह्मा वरदान देते हैं और वो बच्चे एड़वांस में आते हैं यहाँ वो वरदान माना सही है?
बाबा– वरदान कोई, वरदान कोई गलत होता है क्या?
जिज्ञासु– नहीं, माना वो वरदान ब्रह्मा ने दिये हैं।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा– हाँ, ब्रह्मा की जितनी बुद्धि है उतना ही वरदान देगा।
जिज्ञासु– वो उस समय...अभी...एड़वान्स में आने के बाद...
बाबा– आ गई आत्मा।
जिज्ञासु– वो सही होते हैं?
बाबा– हाँ, वो वरदान उतना ही काम करेगा जितना देनेवाले की बुद्धि काम करती है। उससे जास्ती काम नहीं करेगा।
जिज्ञासु– न, वो सत्य है ना वो जो वरदान देते हैं?
बाबा– किसी ने कहा तुम्हें आगे चलकर के एक छोटा राज्य मिल जायेगा, छोटे राज्य के राजा बन जायेंगे तो गलत है क्या? कुछ प्राप्ति तो हुई है, अप्राप्ति तो नहीं कहेंगे।
Time: 41.30-42.25
Student: Baba, Brahma gives boons through Gulzar Dadi and if those children come to advance (party), will those boons prove correct here?
Baba: Are boons wrong?
Student: No, I mean to say Brahma gave those boons.
Baba: Yes, Brahma will give boons only to the extent his intellect works.
Student: So that time…. now after coming in the advance…
Baba: The soul has come here.
Student: Do they become true?
Baba: Yes, that boon will work only to the extent the intellect of the giver works. It will not work beyond that.
Student: No, are the boons that he gives true?
Baba: If someone tells you that you will get a small kingdom in future, you will become a king of a small kingdom, is it wrong? You certainly achieved something. It will not be said to be non-attainment [will it]?

42.28–43.50
जिज्ञासु– बाबा अभी बताया, देनेवाली देवी एक ही ओमराधे। ऐसा पुरूषार्थ कब किया गया? जीतेजी या शरीर छोड़ने के बाद?
बाबा– जब साकार में जीवित थी तब किया और अभी प्रवेश कर के पुरूषार्थ कर रही है तो भी ऐसा ही पुरूषार्थ कर रही है।
Time: 42.28-43.50
Student: Baba, just now it was told that there is only one *Devi* who gives, i.e. Om Radhey. When did she make such *purusharth* (spiritual efforts)? Was it when she was alive or after leaving her body?
Baba: She made such purusharth when she was alive in corporeal form. And now she is making it by entering [someone]; so even now she is making similar purusharth.

जिज्ञासु– साकार में तो शिवबाबा को याद नहीं किया।
बाबा– हाँ, शिवबाबा को याद नहीं किया; लेकिन जो कुछ भी शिव ने बोला उस बोले हुए को जितना भी बचपनी बुद्धि से समझा उतना फॉलो किया या नहीं किया?
जिज्ञासु– किया।
बाबा– और समझा भी कि नहीं समझा? जैसे बच्चा बुद्धि होता है, कोई सात्विक बच्चा होता है, कोई तामसी बच्चा होता है। तो जगदम्बा ओमराधे ने जो फॉलो किया मुरली को वो सात्विक बच्चे के रूप में फॉलो किया या तामसी बच्चे के रूप में फॉलो किया?
जिज्ञासु– सात्विक।
बाबा– बस। और अभी भी फॉलो कर रही है। अभी भी ब्रह्मा के मुकाबले मम्मा की आत्मा अंदर से जास्ती समझ रही है। इसलिए भक्तिमार्ग में दिखाते है किसका जन्म पहले हुआ?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु– राधा।
बाबा– राधा का जन्म पहले हुआ और कृष्ण का जन्म बाद में दिखाते हैं, क्यों? फाउन्ड़ेशन कहाँ पड़ा?
जिज्ञासु– संगमयुग में।
बाबा– संगमयुग की बात है। बाकी सतयुग में तो दोनों बच्चे साथ ही साथ पैदा होंगे।
Student: She did not remember Shivbaba in corporeal form.
Baba: Yes, she did not remember Shivbaba. But whatever words Shivbaba spoke, did she follow (i.e. implement) whatever she understood through her child-like intellect or did she not?
Student: She followed.
Baba: And did she understand it or not? For example some have a child-like intellect; one is a pure child and another one is a degraded child. So, when Jagdamba Om Radhey followed Murli, did she follow it in the form of a pure child or in the form of a degraded child?
Student: As a pure child.
Baba: That is all. And even now she is following it. Even now when compared to Brahma, the soul of Mamma understands more; this is why (among Radha and Krishna) who is shown to have been born first in the path of *bhakti*?
Student: Radha.
Baba: Radha was born first and Krishna was born later; why? Where was the foundation laid?
Student: In the Confluence Age.
Baba: It is about the Confluence Age. As regards the Golden Age, both children will be born together.

43.53–45.53
जिज्ञासु– बाबा, हर युग के बीच एक संगम होता है। कलियुग और सतयुग का जो है वो सबसे श्रेष्ठ संगम माना गया पुरूषोत्तम संगमयुग। बाकी सतयुग–त्रेता, त्रेता–द्वापर और द्वापर–कलियुग के बीच भी संगम होता है। ये जो पुरूषोत्तम संगम है बाबा जो कलियुग और सतयुग के बीच का वो सौ वर्ष का है तो बाकी के जो संगम हैं वो कितने साल का क्योंकि ये जो है कलियुग में हम सम्पूर्ण शुद्र से सम्पूर्ण ब्राह्मण सो देवता बनते हैं उसके लिए हमको सौ वर्ष लगता है तो वहाँ पर भी सतयुगी देवता से जब त्रेतायुगी क्षत्रिय में उतरते हैं तो वो जो संगम का पीरियड़ है वो कितने वर्ष का होता है?
Time: 43.53-45.53
Student: Baba, there is a confluence between every age. The confluence of the Iron Age and the Golden Age is considered to be the most righteous Confluence Age: the *Purushottam Sangamyug*. There is a confluence of the Golden Age and the Silver Age; Silver Age and Copper Age; Copper Age and Iron Age as well. Baba, this *purushottam sangam* between the Iron Age and the Golden Age is of hundred years. So, the remaining Confluences are of how many years because in this Iron Age it takes hundred years for us to transform from a complete *Shudra* to complete *Brahmin* and then a deity. So, even there, when we descend from the stage of Golden Age deity to Silver Age Kshatriya, what is the period of that Confluence?

बाबा– परिवर्तन का कार्य जितना कठिन होगा उतना लम्बा टाईम चाहिए और परिवर्तन का कार्य जितना थोड़ा है, थोड़ा टाईम चाहिए। गिरावट सृष्टि में ज्यादा आ गई है। आज के रिफार्म करनेवाली आत्मायें भी इस सृष्टि पर आ रही हैं। वो ये हामी भरे कि अरे, हम 6 महीने में ये काम कर देंगे। जैसे एड़वांस पार्टी में कोई विष्णु पार्टी निकली उन्होंने

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

क्या घोषणा क्या कर दी, निकलते ही? 6 महीने के अंदर हम माला बनाए के दिखायेंगे। तो हो गया?
जिज्ञासु– नहीं हुआ।
Baba: The more difficult the task of transformation is the longer it takes and the lesser the task of transformation, the shorter the time required for it. There is greater downfall in the world (now). Reformist souls are coming in this world today also. If they say, 'yes, we will accomplish this task within six months…' for example, in the advance party, a Vishnu Party emerged; what did they announce as soon as they emerged? We will prepare the rosary within six months. So, did it happen?
Student: It did not.

बाबा– इतना बड़ा काम, इतना बड़ा पसारा फैला हुआ है, दुगर्ति का। एकदम खत्म हो जायेगा क्या?
जिज्ञासु– बाबा जो शूटिंग पीरियड़ है वो शूटिंग पीरियड़ में जो रूँग वर्ष दिया गया।
बाबा– जो बात अभी प्रश्न किया वो समझ में आ गया?
जिज्ञासु– हाँ, ये समझ में आ गया।
बाबा– हाँ, और आगे।
जिज्ञासु– जो शूटिंग पीरियड़ है बाबा उसमें जो रूँग वर्ष दिया गया है, वो रूँग वर्ष आत्माओं को और पुरूषार्थ करने के हिसाब से दिया हुआ है।
बाबा– हाँ, जी।
जिज्ञासु– वो रूँग वर्ष है, वो ये जो संगम का यादगार बनता है कि बाबा, जो सतयुग–त्रेतायुग का जो है। वो जो संगम है सतयुग–त्रेता का उस संगम के लिए यहाँ पर शूटिंग पीरियड़ में रूँग वर्ष आया है?
बाबा– बिल्कुल।
Baba: Such a big task; there is such an expanse of degradation spread [in the world]. Will it end at once?
Student: Baba, an additional (*rung*) year has been added to the shooting period…
Baba: Did you understand the issue that you raised just now?
Student: Yes, I understood this.
Baba: Yes, what else?
Student: Baba an additional (*rung*) year has been added to the shooting period; that rung year has been given to the souls from the point of view of making extra *purusharth*.
Baba: Yes.
Student: Baba, is that additional (*rung*) year a memorial of the Confluence of the Golden Age and the Silver Age? Has the additional (*rung*) year been shown in the shooting period for the confluence of the Golden Age and the Silver Age?
Baba: Exactly.

46.00–47.25
जिज्ञासु– बाबा, बाबा ने बोला – रचयिता को फिर भी समझा जा सकता है; लेकिन रचना को नहीं समझ सकते हैं।
बाबा– क्योंकि रचयिता ज्यादा सीधा–साधा है या रचना ज्यादा सीधी–साधी है?
जिज्ञासु– रचयिता।
बाबा– रचयिता सीधा–साधा है, भोला–भाला है और रचना तो उतनी सीधी–साधी नहीं है। और?
जिज्ञासु– क्या वो अंत तक भी समझ में नहीं आयेगी या समझ में भी आयेगी कभी?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा– अरे, उसकी समझ में आ गई तो समझ लो सबकी समझ में आ गई। एक के पतित बनने से सब पतित हो जाते है और एक के पावन बनने से सब पावन हो जाते है तो कितना महत्व है रचना का।
जिज्ञासु– पढ़ाने वाला रचयिता है फिर भी रचना के ऊपर पूरा आधार।
बाबा– वो बाप, बाप नहीं है जो खुद जलते हुए घर में से निकल के भाग जाए जंगल में और बच्चे को जलता हुआ छोड़ जाए, ऐसा बाप चाहिए? कैसा चाहिए आपको?
जिज्ञासु– साथ ले जानेवाला चाहिए।
बाबा– बहुत चालाक हो।
Time: 46.00-47.25
Student: Baba, Baba has said, 'you can understand the Creator anyway, but you cannot understand the creation'.
Baba: It's because, is the Creator simpler or the creation simpler?
Student: The Creator.
Baba: The Creator is simple (*seedha-sadha*), innocent (*bhol-bhala*) whereas the creation is not so simple. Anything else?
Student: Will we not be able to understand her till the end or will we ever understand her?
Baba: Arey, if she understands then you can think that everyone will understand. Everyone becomes sinful when one becomes sinful and everyone becomes pure when one becomes pure; so the creation is so important!
Student: The Creator is the teacher, yet everything is dependant on the creation.
Baba: That father is not a father who runs away from a burning house to the jungle and leaves the child to burn behind; do you want such a father? What kind [of a father] do you want?
Student: The one who takes us along.
Baba: You are very clever.

……
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info